पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

वर्ष : 4 अंक : 4 अक्टूबर, 2024 कुल पृष्ठ : 19 ISSN: 2583-0511(Online)

Visit us: www.pashupalakmitra.in

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511(Online)

संपादिकीय पैनल

प्रधान संपादक

डॉ. सतीश कुमार पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संपादक

पशु प्रजनन एवं मादा रोग विशेषज्ञ

1. डॉ.आशुतोष त्रिपाठी
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   स.व.प. कृषि वि.वि., मेरठ
2. डॉ. विकास सचान
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

पशु पोषण विशेषज्ञ

1. डॉ. दिनेश कुमार
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर
2. डॉ. अभिषेक कुमार सिंह
   असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विशेषज्ञ

1. डॉ. ममता
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा
2. डॉ. उत्कर्ष कुमार त्रिपाठी
   असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पशु औषधि विशेषज्ञ

1. डॉ. नीरज ठाकुर
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वर्ष : 4 अंक: 4 अक्टूबर, 2024

क्रमांक	लेख का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	**पशुपालन: कृषि समृद्धि और मानव कल्याण का अभिन्न अंग**: डॉ. करिश्मा चौधरी एवं डॉ. हिना अशरफ वाइज़	3–5
2.	**मुर्गीपालन में विकास प्रवर्तक के रूप में एंटीबायोटिक्स का उपयोग: मानव के लिए खतरा:** आशा, पूजा, रवि डबास, भूपेन्द्र एवं प्रत्यांशु श्रीवास्तव	6-8
3.	**डेरी व्यवसाय की योजना हेतु आवश्यक बिंदु:** डॉ. ममता, डॉ.अजय कुमार, डॉ. रजनीश सिरोही एवं डॉ. विशाखा गौर	9-11
4.	**घोड़ों के लिए पोषण और आहार प्रबंधन:** डॉ. महेन्द्र सिंह मील	12-14
5.	**क्षेत्रीय परिस्थितियों में गोवंश में भ्रूण स्थानांतरण: एक क्रांतिकारी तकनीक:** डॉ. कृष्ण नंद बंसल	15-16
6.	**राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अंतर्गत भेंड़ / बकरी पालन योजना: स्वरोजगार का उत्तम विकल्प:** डॉ. संजय कुमार मिश्र एवं डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय	17-18

Visit us: www.pashupalakmitra.in

संपर्क सूत्र

डॉ. सतीश कुमार पाठक,
प्रधान संपादक
असिस्टेंट प्रोफेसर,पशुशरीर रचना शास्त्र विभाग,
पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बरकछा, मिर्जापुर-231001, उत्तर प्रदेश
ईमेल आई डी: pashupalakmitra1@gmail.com

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुपालन: कृषि समृद्धि और मानव कल्याण का अभिन्न अंग

डॉ. करिश्मा चौधरी[1] एवं डॉ. हिना अशरफ वाइज़[2]

[1]पीएचडी और [2]सह आचार्य, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविधालय, वल्लभनगर, उदयपुर

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका है। लगभग 20.5 मिलियन लोग अपनी आजीविका के लिए पशुधन पर निर्भर हैं। पशुधन ने छोटे कृषक परिवारों की आय में 16% का योगदान दिया, जबकि सभी ग्रामीण परिवारों के लिए यह औसत 14% है । पशुधन ग्रामीण समुदाय के दो-तिहाई लोगों को आजीविका प्रदान करता है साथ ही यह भारत में लगभग 8.8% आबादी को रोजगार भी प्रदान करता है।विभिन्न पशु जैसे की गाय ,भैंस, भेड़ और बकरी, दूध और दूध से बने उत्पादों, जैसे मक्खन, पनीर, दही और पनीर के प्राथमिक आपूर्तिकर्ता हैं।अपने उच्च पोषण तत्वों और प्रोटीन के कारण, कई जानवरों जैसे मुर्गियाँ, बकरियाँ, बत्तखें, सूअर और भैंसों का उपयोग मांस के लिए किया जाता है।आग लगने की संभावना वाले सूखे झाड़ियों को कई जानवर चबाकर खा जाते हैं, जिससे कृषि भूमि पर खरपतवारों के फैलाव को रोकने में मदद मिलती है। इससे चरम परिस्थितियों में होने वाले जोखिम और चोट को कम किया जा सकता है फलस्वरुप, भूमि प्रबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुधन की भूमिका

पशुधन किसानों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में किसान मिश्रित खेती प्रणाली को अपनाते हैं, यानी फसल और पशुधन का संयोजन, जहाँ एक उद्यम का उत्पादन दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाता है, जिससे संसाधन दक्षता का एहसास होता है। मनुष्य को पशुपालन से लाभ होता है क्योंकि यह उच्च पोषक तत्वों वाले खाद्य उत्पादों की एक विविध श्रृंखला प्रदान करता है। पशुधन किसानों की विभिन्न तरीकों से सेवा करते हैं-

1. **आय** : भारत में पशुधन कई परिवारों के लिए सहायक आय का स्रोत है, खासकर उन गरीब और छोटे परिवारों के लिए जो कुछ ही पशु रखते हैं। गाय और भैंस के दूध की बिक्री के माध्यम से पशुपालकों को नियमित आय प्रदान करती है। भेड़ और बकरी जैसे पशु विवाह, बीमार व्यक्तियों के उपचार, बच्चों की शिक्षा, घरों की मरम्मत आदि जैसी आपात स्थितियों के दौरान आय के स्रोत के रूप में काम आते हैं। पशु चलते-फिरते बैंक और संपत्ति के रूप में भी काम करते हैं जो मालिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।
2. **रोजगार**: भारत में बहुत से लोग कम साक्षर और अकुशल हैं साथ ही अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। लेकिन मौसमी प्रकृति की कृषि होने की वजह से इनको साल में अधिकतम 180 दिन ही रोजगार मिल सकता है। भूमिहीन और कम भूमि वाले लोग कम कृषि मौसम में अपने श्रम का उपयोग करने के लिए पशुधन पर निर्भर रहते हैं।पशुपालन बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देता है, जिससे लोगों और देश की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में सहायता मिलती है।
3. **भोजन:** पशुधन उत्पाद जैसे दूध, मांस और अंडे पशुपालकों के लिए पशु प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। 2022-23 के दौरान दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगभग 459 ग्राम/दिन है; अंडे की उपलब्धता 101/वर्षऔर माँस की उपलब्धता 11 किलोग्राम /वर्ष है।

मछली का सेवन , जिसमें ओमेगा- 3 फैटी एसिड , डीएचए और विटामिन डी शामिल हैं , व्यक्ति को अधिक खुश और स्वस्थ बनाता है।

4. **सामाजिक सुरक्षा** : पशु मालिकों को समाज में उनकी स्थिति के संदर्भ में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। जिन परिवारों के पास पशु हैं , खासकर भूमिहीनों के पास , वे उन परिवारों से बेहतर स्थिति में हैं जिनके पास पशु नहीं हैं। देश के विभिन्न भागों में विवाह के दौरान पशुओं को उपहार में देना एक बहुत ही आम बात है। पशुओं का पालन-पोषण भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा है। पशुओं का उपयोग विभिन्न सामाजिक धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता है। गृह प्रवेश समारोहों के लिए गायों का उपयोग किया जाता है ; त्यौहारों के मौसम में बलि के लिए मेढ़े , हिरन और मुर्गे की पूजा की जाती है ; विभिन्न धार्मिक कार्यों के दौरान बैल और गायों की पूजा की जाती है। कई मालिकों को अपने पशुओं से लगाव हो जाता है।
5. **मसौदा** : बैल भारतीय कृषि की रीढ़ हैं। किसान , खास तौर पर सीमांत और छोटे किसान , खेती की जुताई, ढुलाई और उत्पादन तथा इनपुट दोनों के परिवहन के लिए बैलों पर निर्भर रहते हैं।
6. **गोबर और खाद** : ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर का उपयोग कई प्रयोजनों के लिए किया जाता है , जिसमें ईंधन (गोबर के उपले) , उर्वरक (खेत की खाद) और प्लास्टरिंग सामग्री (गरीब आदमी का सीमेंट) शामिल हैं। पशुओं के मलमूत्र , रक्त और हड्डियों का उपयोग खाद के रूप में किया जाता है। फसल की पैदावार और उत्पादन बढ़ाने के लिए खाद को खेतों में डाला जाता है। इसका उपयोग आग लगाने और दीवार और फर्श के प्लास्टर के रूप में भी किया जाता है। गैर-मानव श्रम श्रमिक पशुओं द्वारा प्रदान किया जाता है। उन्हें खेतों की जुताई, उत्पाद वितरित करने और सेना में सेवा करने के लिए नियोजित किया जाता है ।

पशुपालन का मानव कल्याण मे महत्व

मनुष्य को पशुपालन से लाभ होता है क्योंकि यह उच्च पोषक तत्वों वाले खाद्य उत्पादों की एक विविध श्रृंखला प्रदान करता है। वे उच्च खाद्य मांग की व्यावसायिक मांगों को पूरा करते हैं। उन्हें दुधारू पशु के रूप में जाना जाता है क्योंकि वे हमें प्रोटीन, विटामिन और खनिजों से भरपूर दूध देते हैं।

पशुपालन उन अन्य जानवरों के लिए भी महत्वपूर्ण है जिन पर मनुष्य अंडे और मांस के लिए निर्भर करता है, जैसे मुर्गियाँ, बत्तख, गीज़, बकरी, मछली, आदि। उन्हें मांस के लिए भी पाला जाता है , जिसमें उच्च प्रोटीन, आयरन, लिपिड, विटामिन बी12 और जिंक का स्तर होता है। ये पोषक तत्व चयापचय दर बढ़ाने, तृप्ति बढ़ाने और भूख कम करने के लिए आवश्यक हैं।

पशु उत्पाद फसलों की तुलना में कई लाभ प्रदान करते हैं।

उदाहरण के लिए:

1. मांस और दूध का उत्पादन वर्ष भर किया जा सकता है, जो अनाज, फल और सब्जियों की तुलना में कम मौसमी होते हैं।
2. पशुओं, विशेषकर छोटे पशुओं को, आवश्यकता पड़ने पर भोजन या आय के लिए मारा जा सकता है।
3. दूध और मांस दोनों को संरक्षित किया जा सकता है - दूध को मक्खन, दही या पनीर के रूप में, तथा मांस को सुखाकर, सुखाकर, धूम्रपान करके और नमक लगाकर संरक्षित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे दुनिया की आबादी बढ़ती है और जीवन स्तर बढ़ता है , वैसे-वैसे दूध, अंडे और मांस की मांग भी बढ़ती है। पारंपरिक पशु प्रजनन और देखभाल प्रक्रियाओं के अलावा , गुणवत्ता में सुधार और उत्पादकता बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए। पशुपालन में पशुधन पशुओं के प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग शामिल है।इसके अलावा , इसमें आहार, प्रजनन और रोग नियंत्रण प्रबंधन जैसे विभिन्न कारक शामिल हैं , जो पशु उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने में सहायता करते हैं।

पशुपालक मित्र 4(4): 6-8 ; अक्टूबर, 2024
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

मुर्गी पालन में विकास प्रवर्तक के रूप में एंटीबायोटिक्स का उपयोग: मानव के लिए खतरा

आशा[1], पूजा[2], रवि डबास[3], भूपेन्द्र[4] एवं प्रत्यांशु श्रीवास्तव[5]

[1]नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर, 482004

[2, 5]पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो अनुसंधान संस्थान, दुवासु, मथुरा, 281001

[3,4]भाकृअनुप - भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, 243122

भारत में पोल्ट्री मांस उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, जिसके पीछे उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग और इसके कम लागत, उच्च प्रोटीन और कम वसा वाले गुण हैं। हालांकि, पोल्ट्री उत्पादन में एंटीबायोटिक्स का व्यापक उपयोग स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरे उत्पन्न कर रहा है। एंटीबायोटिक्स का उपयोग मुख्य रूप से रोग प्रबंधन, विकास प्रवर्तक के रूप में, और आहार सुधार के लिए किया जाता है। लेकिन इसके अनियंत्रित उपयोग से एंटीबायोटिक प्रतिरोधी बैक्टीरिया का विकास हो रहा है, जो मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। मुर्गियों के मांस और अंडों में एंटीबायोटिक्स के अवशेष उपभोक्ताओं के लिए जोखिम बढ़ाते हैं। इसके अलावा, पर्यावरण में एंटीबायोटिक्स का अत्यधिक उपयोग जल और मिट्टी को प्रदूषित कर रहा है। समाधान के रूप में, कई देशों ने एंटीबायोटिक्स के विकास प्रवर्तक के रूप में उपयोग पर प्रतिबंध लगाए हैं और वैकल्पिक उपायों पर शोध किया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा इस समस्या को संबोधित करने के लिए जागरूकता और निगरानी बढ़ाई जा रही है। इस प्रकार, एंटीबायोटिक के प्रभावी प्रबंधन के लिए वैश्विक सहयोग की आवश्यकता है।

परिचय

भारत दुनिया के प्रमुख पोल्ट्री मांस उत्पादकों में से एक है। हाल के वर्षों में पोल्ट्री मांस की मांग बढ़ी है क्योंकि उपभोक्ता न केवल इसकी कम कीमतों से, बल्कि इसके स्थिर और लचीले उपयोग के साथ-साथ उच्च प्रोटीन और कम वसा वाले गुणों से भी आकर्षित होते हैं। पोल्ट्री उद्योग में एंटीबायोटिक्स का व्यापक उपयोग किया जाता है, खासकर मांस उत्पादन बढ़ाने और बीमारियों की रोकथाम के लिए। ब्रॉयलर मुर्गियों को प्रतिरक्षा बढ़ाने और जठरांत्र संक्रमण नियंत्रित करने के लिए कम खुराक में एंटीबायोटिक्स दिए जाते हैं। पोल्ट्री उत्पादन में इस्तेमाल होने वाली एंटीबायोटिक्स की मात्रा कुल पशुचिकित्सा एंटीबायोटिक्स का 26% से अधिक है, जिससे ब्रॉयलर मुर्गियों को हर साल 430 मिलीग्राम/किलोग्राम एंटीबायोटिक्स का एक्सपोजर होता है ।

एंटीबायोटिक के अनियंत्रित उपयोग से रोगाणुरोधी प्रतिरोधी बैक्टीरिया का विकास होता है, जो इंसानों, जानवरों, और पर्यावरण के बीच फैल सकते हैं। इससे एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया इंसानों में फैलकर इलाज को कम प्रभावी बना देते हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधी गंभीर खतरे उत्पन्न होते हैं। अंडे और ब्रॉयलर मांस में मौजूद बैक्टीरिया कई दवाओं के प्रतिप्रतिरोधी हो गए हैं, जिनमें वैनकॉमाइसिन-प्रतिरोधी एंटरोकोकस (VRE) शामिल है। एंटीबायोटिक्स के अवशेष भी मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं, जैसे टेट्रासाइक्लिन बच्चों के दांतों के विकास को प्रभावित कर सकता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

1. एंटीबायोटिक का मुर्गीपालन में उपयोग

मुर्गीपालन में एंटीबायोटिक्स का उपयोग मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों के लिए किया जाता है:

- **रोग प्रबंधन:** मुर्गियों को बीमारियों से बचाने के लिए एंटीबायोटिक्स दिए जाते हैं।
- **विकास प्रवर्तक:** मुर्गियों के तेजी से विकास के लिए कम मात्रा में एंटीबायोटिक्स दिए जाते हैं।
- **आहार सुधार:** एंटीबायोटिक्स आंतों की सूक्ष्मजीव स्थिति को सुधारने और आहार के अवशोषण को बढ़ाने में सहायक होते हैं ।

2. मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम

- **एंटीबायोटिक प्रतिरोध (Antibiotic Resistance):** मुर्गियों को लंबे समय तक एंटीबायोटिक्स देने से बैक्टीरिया प्रतिरोधी हो जाते हैं। ये प्रतिरोधी बैक्टीरिया मनुष्यों तक पहुँच सकते हैं, जिससे एंटीबायोटिक प्रतिरोध का खतरा बढ़ जाता है। इससे गंभीर बीमारियों के उपचार में कठिनाई होती है, क्योंकि सामान्य एंटीबायोटिक्स अब प्रभावी नहीं रहते।

खाद्य श्रृंखला के माध्यम से संचरण और उसके प्रभाव

1. **खाद्य श्रृंखला के माध्यम से संचरण**
   मुर्गियों के मांस और अंडों में एंटीबायोटिक्स और उनके अवशेष हो सकते हैं। जब मनुष्य ऐसे उत्पादों का सेवन करते हैं, तो उनके शरीर में एंटीबायोटिक्स का प्रभाव धीरे-धीरे जमा हो सकता है।
2. **रोग फैलने का खतरा**
   एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया का प्रसार न केवल मनुष्यों को संक्रमित कर सकता है, बल्कि यह पर्यावरण में भी फैल सकता है। यह समस्या विशेष रूप से उन लोगों के लिए अधिक है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुर्गीपालन उद्योग से जुड़े होते हैं।
3. **पर्यावरणीय प्रभाव**
   मुर्गीपालन में एंटीबायोटिक्स का अत्यधिक उपयोग जल और मिट्टी को प्रदूषित कर सकता है। मुर्गी फार्म से निकलने वाले अपशिष्ट में एंटीबायोटिक अवशेष हो सकते हैं, जो आसपास के पारिस्थितिक तंत्र में प्रवेश कर सकते हैं। इससे न केवल पर्यावरण प्रभावित होता है, बल्कि यह उन जीवों में भी एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया के विकास का कारण बन सकता है, जो प्रदूषित क्षेत्रों में रहते हैं।
4. **नियामक उपाय और समाधान**
   - **विकसित देशों में प्रतिबंध:** कई देशों में एंटीबायोटिक्स के विकास प्रवर्तक के रूप में उपयोग पर प्रतिबंध लगाए गए हैं। यूरोपीय संघ ने 2006 में मुर्गीपालन में इस उपयोग को रोक दिया था।
   - **वैकल्पिक उपाय:** एंटीबायोटिक्स के उपयोग को कम करने के लिए वैकल्पिक उपायों पर शोध किया जा रहा है। इनमें वैक्सीनेशन, प्रोबायोटिक्स, और आहार में सुधार के तरीके शामिल हैं। इसके अलावा, प्राकृतिक विकास प्रवर्तकों के रूप में विभिन्न पौधों और औषधीय उत्पादों का उपयोग भी एक संभावित समाधान हो सकता है।
   - **सतर्क उपभोग:** उपभोक्ताओं को उन उत्पादों का चयन करना चाहिए, जिनमें "एंटीबायोटिक-मुक्त" या "ऑर्गेनिक" लेबल हो। इससे न केवल स्वास्थ्य में सुधार होता है, बल्कि एंटीबायोटिक के अत्यधिक उपयोग को कम करने में भी मदद मिलती है।
5. **अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की भूमिका**
   विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), खाद्य और कृषि संगठन (FAO) और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं इस समस्या को संबोधित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रही हैं। इन संगठनों ने वैश्विक

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

स्तर पर एंटीबायोटिक उपयोग पर निगरानी बढ़ाने और इसके खतरों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम शुरू किए हैं।

निष्कर्ष

मुर्गीपालन में एंटीबायोटिक्स का उपयोग विकास प्रवर्तक के रूप में करना एक गंभीर समस्या है, जिसका सीधा असर मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ता है। एंटीबायोटिक प्रतिरोध, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण प्रदूषण जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए जागरूकता, उचित नियामक उपाय और सतर्कता आवश्यक है। इसके लिए वैश्विक स्तर पर सहयोग और समन्वय की आवश्यकता है, ताकि इस समस्या का प्रभावी समाधान निकाला जा सके।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

डेरी व्यवसाय की योजना हेतु आवश्यक बिंदु

डॉ. ममता, डॉ.अजय कुमार, डॉ. रजनीश सिरोही एवं डॉ. विशाखा गौर

पशुधन उत्पादन प्रबंधन विभाग, दुवासु, मथुरा।

डेयरी व्यवसाय मानव इतिहास में सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है, लेकिन आज भी क्रियान्वयन के लिहाज से यह सबसे चुनौतीपूर्ण उद्योगों में से एक है। इस व्यवसाय में प्रायः कई किसानों को आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ता है, और कई को अक्सर असमय ही यह व्यवसाय बंद करना पड़ जाता है। ऐसा इसलिए क्यूंकि पशुपालन पारम्परिक दृष्टिकोण से किया जाता है इसके लिए आवश्यक व्यावसायिक दृष्टिकोण की कहीं न कहीं कमी रह जाती है। इस व्यवसाय से जुड़े अनेकों विशेष क्षेत्र हैं, पशु पालन के अलावा, इसमें पशु स्वास्थ्य, प्रजनन, परिवहन, भंडारण और चारा और चारे के प्रबंधन सहित कई तरह के व्यावसायिक प्रबंधन शामिल हैं , जिनमें व्यापक विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

प्रायः बहुत से लोग बिना किसी अनुभव के डेयरी उद्योग में प्रवेश करते हैं , वे इस तथ्य से अनभिज्ञ रह जाते हैं कि डेरी व्यवसाय सिर्फ उपकरणों पर आधारित नहीं है यहाँ उन्हें जीवित पशुओं के साथ काम करना होता हैं और इसलिए डेयरी फार्मिंग के लिए अतिरिक्त विशेषज्ञता और धैर्य की आवश्यकता होती है। उदहारण के लिए बहुत से नए पशुपालक, मुख्य रूप से दूध निकालने पर ध्यान केंद्रित रखते हैं, वे इस तथ्य से अनभिज्ञ होते हैं कि गायों को ब्याने के चौथे या पाँचवें महीने तक गर्भवती हो जाना चाहिए। डेयरी पशुओं में गर्मी के लक्षणों को तुरंत पहचानने का महत्व भी कुछ ऐसा है जिसे कई पशुपालक अनदेखा करते हैं। डेयरी फार्मिंग से कम लाभ मिलने के कई कारण हो सकते हैं। आम तौर पर ये समस्याएँ पशुओं से संबंधित होती हैं और इन्हें प्रमुख कारण माना जाता है , फिर भी व्यवसाय नियोजन से संबंधित मुद्दों को नजरअंदाज कर दिया जाता है , जिनका विफल होना डेयरी व्यवसाय में विफलता का मुख्य कारण बनता है। इसलिए इस व्यवसाय को आरंभ करते हुए पहला महत्वपूर्ण कदम परियोजना की व्यवहार्यता का विश्लेषण करना होना चाहिए।

व्यावसायिक डेयरी के सफल न होने का सबसे बड़ा कारण, परियोजना के क्रियान्वयन से पहले उचित योजना का अभाव है। डेयरी व्यवसाय की योजना के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण और संबंधित क्रियाएँ है जैसे पशुओं का प्रजनन और आनुवंशिकी, पशुओं के स्वास्थ्य प्रबंधन, विभिन्न श्रेणियों के पशुओं के लिए संतुलित आहार प्रदान करना , पोषण संबंधी जरूरतों के आधार पर राशन तैयार करना और समायोजित करना, इष्टतम दूध उत्पादन और पशु कल्याण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकतानुसार पूरक और योजक का उपयोग करना। अतः इन सभी आयामों पर पशुपालक को ज्ञान होना चाहिए। डेरी व्यवसाय की योजना हेतु विभिन्न बिंदुओं पर अवश्य ध्यान देना चाहिए -

बुनियादी ढांचा और प्रौद्योगिकी का उपयोग- फार्म के बुनियादी ढांचे (दूध वाले पार्लरों , चारा भंडारण सुविधाओं और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों) का उचित निर्माण और रखरखाव पर उचित ध्यान देना चाहिए । पशुओं के प्रदर्शन के समय समय पर आकलन हेतु उचित अभिलेख (रिकॉर्ड) रखने

चाहिए, ये आपके प्रबंधन की सही तस्वीर प्रस्तुत करते हैं और विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सहायक होते हैं। उन्नत मशीनरी और अनुकूलित प्रक्रियाओं के उपयोग के माध्यम से फार्म की क्षमता में वृद्धि पर ध्यान देना चाहिए। नवीन तकनीकों (जैसे कि स्वचालित दूध देने वाली प्रणालियों , दूध ठंडा करने वाले टैंकों और गुणवत्ता परीक्षण उपकरणों का उपयोग) का प्रयोग , उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार के लिए तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए ।

पशुओं के लिए चारा प्रबंधन- पशुओं के लिए वर्ष भर चारा और आहार पूर्ती पर स्पष्ट योजना होनी चाहिए। इसके लिए उच्च गुणवत्ता वाले चारे और साइलेज का उत्पादन करने के लिए फसलों को उगाना और उनका प्रबंधन करने पर ज्ञान और प्रशिक्षण होना आवश्यक है । फसलों या पशु आहार के पोषण मूल्य को बनाए रखने और उन्हें खराब होने से बचाने के लिए उनके उचित भंडारण और प्रसंस्करण के लिए नवीन प्रथाओं को अपनाना चाहिए। फसलों के उत्पादन में खाद को रीसायकल करना और प्रदूषण को कम करने के लिए प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए। मुख्य रूप से अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरण की रक्षा के लिए रोटेशनल चराई, संरक्षण जुताई और एकीकृत कीट प्रबंधन जैसी टिकाऊ प्रथाओं को अपनाना चाहिए। उचित जल प्रबंधन हेतु , सफाई और सिंचाई उद्देश्यों के लिए जल संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

व्यवसाय और वित्तीय प्रबंधन- इसमें ध्यान देने वाले विशेष बिंदु है, वित्तीय नियोजन या बजट बनाना, वित्तीय पूर्वानुमान लगाना और आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करने के लिए नकदी प्रवाह का प्रबंधन करना। पशुपालन हेतु पोषण, श्रम, पशु चिकित्सा और स्वस्थ देखभाल, उपकरणों का रखरखाव आदि से संबंधित खर्चों की निगरानी रखना और उनका नियंत्रण करके लागत का प्रबंधन करना । दूध की बिक्री, मूल्य वर्धित उत्पाद बनाना, कृषि-पर्यटन और नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन जैसे विभिन्न लाभकारी प्रथाओं का समावेश करना और इसके लिए निरंतर डेयरी विज्ञान , प्रौद्योगिकी और प्रबंधन प्रथाओं में प्रगति के बारे में जानकारी रखना । अपने उत्पाद की सही बिक्री के लिए उपभोक्ताओं की बदलती पसंद, बाजार के रुझान और प्रतिस्पर्धा को समझना । उत्पादों को अलग करने और ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक ब्रांड के रूप में पहचान बनाना और विपणन अभियान विकसित करना। स्थानीय समुदाय के साथ सकारात्मक संबंध बनाना और आउटरीच और शिक्षा कार्यक्रमों में को प्रोत्साहित करना । पशु कल्याण हेतु नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देना और सतत विकास की और अग्रसर होना।

मानव संसाधन प्रबंधन- स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करना , सामाजिक-आर्थिक विकास में योगदान देना। डेयरी फार्मिंग प्रथाओं को बेहतर बनाने के लिए कर्मचारियों और स्थानीय किसानों के लिए प्रशिक्षण और शैक्षिक अवसर प्रदान करना।

कुल मिलाकर डेरी व्यवसाय की सफलता हेतु पहला महत्वपूर्ण कदम परियोजना की व्यवहार्यता का विश्लेषण करना है। पशुपालक को चाहिए कि वे एक कुशल व्यवसाय योजना बनाएं जिसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें -

 डेयरी फार्म के पैमाने (छोटा, मध्यम, बड़ा) और उत्पादों के प्रकार (दूध, पनीर, दही) पर निर्णय लें।

 डेयरी परियोजना के अल्पकालिक और दीर्घकालिक लक्ष्यों को परिभाषित करें।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

 अपने लक्षित बाजार में डेयरी उत्पादों की मांग का आकलन करने के लिए बाजार का अनुसंधान करें, जिसमें संभावित ग्राहकों और अपने प्रतिस्पर्धीयो का अनुमान मिल सके।

 जल उपलब्धता, चारा और श्रमिकों की उपलब्धता जैसे आवश्यक संसाधनों का मूल्यांकन करें।

 परमिट, लाइसेंस और पर्यावरण नियमों सहित कानूनी और नियामक आवश्यकताओं को समझें।

 प्रारंभिक निवेश, परिचालन लागत, अनुमानित आय और नकदी प्रवाह और वित्तपोषण सहित एक विस्तृत वित्तीय योजना तैयार करें।

 परियोजना की संभावित लाभप्रदता निर्धारित करने के लिए लागत और लाभ का विश्लेषण करें।

 डेयरी फार्मिंग के लिए सरकारी अनुदान और सब्सिडी का पता लगाएं। बैंकों या वित्तीय संस्थानों से कृषि ऋण के लिए आवेदन करें।

 दूध दोहने के क्रम, भोजन की दिनचर्या और झुंड प्रबंधन सहित दैनिक संचालन की रूपरेखा तैयार करें।

 दूध के मूल्य निर्धारण , वितरण चौनल और प्रचार सहित अपने उत्पादों के विपणन के लिए एक रणनीति विकसित करें।

 पशुओं में बीमारी के प्रकोप , प्राकृतिक आपदाओं और बाजार में उतार-चढ़ाव जैसे जोखिमों से बचाव के लिए बीमा खरीदें।

 आपात स्थितियों और अप्रत्याशित घटनाओं के लिए आकस्मिक योजनाएँ विकसित करें।

अंततः पशुपालक को यह समझना आवश्यक है कि डेयरी फार्मिंग सिर्फ पशु पालन से कहीं अधिक है। इसके लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जोकी कृषि विज्ञान , अर्थशास्त्र, प्रौद्योगिकी और व्यवसाय प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को एकीकृत करता हो। सभी उपलब्ध संसाधनों से प्रासंगिक और तथ्यात्मक जानकारी एकत्र करें और बुद्धिमानी से योजना बनाएं। योजना बनाना किसी भी डेयरी व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण पहलू है , जिसमें प्रारंभिक अवधारणा से लेकर उसके संचालन तक, सब कुछ शामिल होता है। एक सफल डेयरी व्यवसाय के लिए पशुपालकों को इसकी योजना तैयार करने में पर्याप्त समय लगाना चाहिए।

घोड़ों के लिए पोषण और आहार प्रबंधन

डॉ. महेन्द्र सिंह मील

सहायक आचार्य पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय
नवानिया, वल्लभनगर ,उदयपुर

घोड़ों के स्वस्थ विकास कार्यक्षमता और दीर्घायु के लिए सही पोषण और आहार प्रबंधन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। घोड़ों की शारीरिक संरचना और पाचनतंत्र विशेष प्रकार के आहार की मांग करते हैं, जो उनकी प्राकृतिक खाने की आदतों के अनुसार होता है । घोड़ों के उचित पोषण और आहार प्रबंधन के लिए निम्नलिखित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

1.घोड़ों का प्राकृतिक आहार और पाचनतंत्र

घोड़े स्वाभाविक रूप से चरने वाले जानवर होते हैं। उनका पाचन तंत्र लम्बे समय तक धीरे-धीरे खाने के लिए अनुकूलित होताहै। उनका पेट छोटा होता है, लेकिन आंतें काफी लम्बी होती हैं, जिससे वे धीरे-धीरे पाचन कर पाते हैं।

आहार का प्रकारः प्राकृतिक आहार में हरी घास और चारा शामिल होता है, जो उनके पाचनतंत्र के लिए सबसे उपयुक्त होता है। घास और चारे में उच्चमात्रा में फाइबर होता है, जो घोड़ों की आंतों के लिए आवश्यक है।

2.आहार के प्रमुख घटक

2.1. घास और चारा

हरी घासः यह घोड़ों के आहार का मुख्य आधार है। इसमें उच्चमात्रा में फाइबर होता है, जो पाचन को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है। हरित घास में पाए जाने वाले पोषक तत्व उनके स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक होते हैं।

सूखी घास: यह घोड़ों के लिए सबसे प्रमुख सूखा आहार है, खासकर तब जब ताजी घास उपलब्ध नहीं होती। घोड़ों को उच्चगुणवत्ता वाली सूखी घास खिलाना चाहिए, जिसमें फफूंद या गंदगी नहीं होनी चाहिए।

2.2. अनाज

जई, **मकई**, **और जौः** ये अनाज घोड़ों के आहार में कार्बोहाइड्रेट और ऊर्जा का एक प्रमुख स्रोत होते हैं। अनाज का सीमित मात्रा में सेवन आवश्यक है, क्योंकि अत्यधिक अनाज पाचन विकार पैदा कर सकता है।

2.3. विटामिन और खनिज

कैल्शियम और फॉस्फोरसः ये खनिज हड्डियों और दांतों के विकास के लिए आवश्यक हैं। घोड़ों को संतुलित मात्रा में कैल्शियम और फॉस्फोरस देना चाहिए।

नमक: नमक घोड़ों के लिए एक आवश्यक पोषक तत्व है। नमक के ब्लॉक को उनके बाड़े में रखा जा सकता है ताकि वे अपनी आवश्यकता के अनुसार उसका सेवन कर सकें।

2.4. पानी

पर्याप्त और ताजा पानी घोड़ों के आहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक वयस्क घोड़े को प्रतिदिन लगभग **20-30** लीटर पानी की आवश्यकता होती है, विशेष रूप से गर्म मौसम में या शारीरिक गतिविधि के बाद। पानी की कमी से डिहाइड्रेशन हो सकता है, जो पाचन और समग्र स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

3. विशेष आहार प्रबंधन

3.1. कार्य के अनुसार आहार

घोड़ों का आहार उनकी शारीरिक गतिविधियों और कार्यभार के अनुसार होना चाहिएः

हल्का काम करने वाले घोड़ेः उन्हें केवल हरी घास या सूखी घास की जरूरत होती है। अतिरिक्त अनाज की आवश्यकता नहीं होती।

मध्यम काम करने वाले घोड़ेः इन्हें कुछ मात्रा में अनाज और फाइबरयुक्त आहार की आवश्यकता होती है, ताकि उनकी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

कठिन काम करने वाले घोड़े (जैसे दौड़नेवाले घोड़े या काम के घोड़े): इन्हें उच्च ऊर्जायुक्त आहार कीआवश्यकता होती है, जिसमें प्रोटीन, अनाज और विटामिन कीमात्रा अधिक होती है।

3.2. उम्र और स्वास्थ्य के आधार पर आहार

छोटे बछड़ेः उन्हें अधिक प्रोटीन और विटामिन की आवश्यकता होती है, क्योंकि वे विकासशील होते हैं । उन्हें नियमित रूप से माँ के दूध के साथ सॉलिडफूड और चारा देना शुरू करना चाहिए।

बूढ़े घोड़ेः उम्र बढ़ने के साथ, घोड़ों का दांत और पाचनतंत्र कमजोर हो जाता है। ऐसे में उनके आहार में नरम और सुपाच्य खाद्य पदार्थों का होना जरूरी होता है, जैसे कि घास का पेस्ट या विशेष वृद्धावस्था आहार।

3.3. मोटापे या पतलेपन से बचाव

घोड़ों के वजन पर नियमित नजर रखनी चाहिए। अत्यधिक मोटापा घोड़ों में लामिनिटिस जैसी समस्याएं पैदा कर सकता है, जबकि कम वजन कमजोरी और रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम कर सकता है। घोड़ों को संतुलित आहार देकर उनका वजन नियंत्रित रखना आवश्यक है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

4. सामान्य आहार प्रबंधन सुझाव

आहार नियमितता: घोड़ों को नियमित समय पर भोजन देना चाहिए ताकि उनका पाचनतंत्र सुचारू रूप से कार्यकर सके।

आहार की मात्रा: घोड़ों को उनकी शारीरिक गतिविधियों, उम्र, और स्वास्थ्य स्थिति के आधार पर आहार देना चाहिए। अधिक मात्रा में भोजन देने से आंतों में समस्या हो सकती है।

धीरे-धीरे आहार परिवर्तन: घोड़ों के आहार में किसी भी प्रकार का परिवर्तन धीरे-धीरे करना चाहिए ताकि उनका पाचनतंत्र नए आहार को स्वीकार कर सके।

पाचन सहायता: घोड़ों को प्राकृतिक फाइबर युक्त आहार देना चाहिए, जो उनके पाचन को बेहतर बनाए रखेगा। प्रोबायोटिक्स और अन्य पाचन सहायक पूरक आहार में शामिल किए जा सकते हैं।

5. संपूर्ण आहार योजना

घोड़ों के लिए एक संतुलित आहार योजना इस प्रकार हो सकती है:

सवेरे का आहार: ताजी घास या सूखी घास के साथ थोड़ी मात्रा में अनाज।

दोपहर काआहार: अगर घोड़ाकामकररहाहै, तोथोड़ाअतिरिक्तअनाजऔर खनिज युक्तआहार।

रात का आहार: घास या चारा, साथ ही आवश्यक मात्रा में विटामिन और मिनरल्सपूरक।

घोड़ों के पोषण और आहार प्रबंधन में उचित संतुलन, गुणवत्ता, और नियमितता का होना आवश्यक है। सही आहार न केवल घोड़ों की शारीरिक क्षमता को बढ़ाता है, बल्कि उनकी दीर्घायु और जीवन गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करता है।

पशुपालक मित्र 4(4): 15-16 ; अक्टूबर, 2024
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

क्षेत्रीय परिस्थितियों में गोवंश में भ्रूण स्थानांतरण: एक क्रांतिकारी तकनीक

डॉ. कृष्ण नंद बंसल

सहायक प्रोफेसर, पशु प्रजनन एवं प्रसूति विभाग,
पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया

भ्रूण स्थानांतरण (एंब्रियो ट्रांसफर) एक अत्याधुनिक प्रजनन तकनीक है, जो गोवंश (गाय, भैंस आदि) में उच्च गुणवत्तापूर्ण संतान प्राप्त करने में सहायक है। इस तकनीक का मुख्य उद्देश्य उच्च उत्पादन वाली नस्लों के बेहतर गुणों को संरक्षित करना और तेजी से उच्च उत्पादकता वाली नस्लों की संख्या बढ़ाना है।

भ्रूण स्थानांतरण प्रक्रिया

भ्रूण स्थानांतरण की प्रक्रिया में सबसे पहले एक उच्च गुणवत्तापूर्ण दानकर्ता (डोनर) गाय का चयन किया जाता है। इस दानकर्ता गाय को हार्मोनल उपचार देकर अधिक संख्या में अंडाणुओं का उत्पादन करवाया जाता है। फिर इस गाय को कृत्रिम गर्भाधान (आर्टिफिशियल इनसेमिनेशन) के द्वारा गर्भवती किया जाता है।

जब भ्रूण उचित अवस्था में पहुंच जाते हैं, तो उन्हें दानकर्ता गाय से निकाल लिया जाता है और उसके बाद इन्हें एक दूसरी 'गर्भधारण करने वाली' गाय (जिसे रिसिपिएंट कहा जाता है) के गर्भाशय में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि उच्च गुणवत्ता वाले जीन भविष्य की पीढ़ियों में संरक्षित रह सकें।

क्षेत्रीय परिस्थितियों में चुनौतियाँ

क्षेत्रीय परिस्थितियों में भ्रूण स्थानांतरण करना चुनौतियों से भरा हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालकों के पास सीमित संसाधन और जानकारी होती है, जो इस तकनीक के प्रसार में बाधक बनती है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी विशेषज्ञता और आवश्यक उपकरणों की कमी भी बड़ी चुनौती होती है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक है कि पशु चिकित्सा विभाग, स्थानीय पशु चिकित्सक, और गैर-सरकारी संगठन मिलकर काम करें। इसके लिए जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जा सकता है, जहां पशुपालकों को भ्रूण स्थानांतरण तकनीक के लाभों के बारे में बताया जाए और उन्हें इस प्रक्रिया के प्रति जागरूक किया जाए।

भ्रूण स्थानांतरण के लाभ

1. **उत्पादन में वृद्धि :** भ्रूण स्थानांतरण से उच्च उत्पादन क्षमता वाली गायों की संख्या तेजी से बढ़ाई जा सकती है, जिससे दूध उत्पादन में वृद्धि होती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

2. **उच्च गुणवत्ता वाले जीन का संरक्षण :** यह तकनीक उच्च गुणवत्तापूर्ण नस्लों के गुणों को संरक्षित करने में मदद करती है , जिससे आने वाली पीढ़ियों में भी बेहतर गुणों का स्थानांतरण हो सके।
3. **अधिक संतान प्राप्ति :** दानकर्ता गाय से एक ही बार में कई भ्रूण प्राप्त किए जा सकते हैं , जिससे अधिक संतान प्राप्त करने का अवसर बढ़ता है।

निष्कर्ष

क्षेत्रीय परिस्थितियों में गोवंश में भ्रूण स्थानांतरण एक क्रांतिकारी तकनीक है , जो पशुपालन के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान कर सकती है। हालांकि इसके सफल क्रियान्वयन के लिए जागरूकता , तकनीकी विशेषज्ञता और सामुदायिक सहयोग की आवश्यकता है। सही प्रशिक्षण और समर्थन के साथ , यह तकनीक हमारे देश के दुग्ध उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है और पशुपालकों की आर्थिक स्थिति में सुधार ला सकती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अंतर्गत भेंड़ / बकरी पालन योजना: स्वरोजगार का उत्तम विकल्प

डॉ. संजय कुमार मिश्र[1] एवं डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय[2]

[1]उप-निदेशक/सहायक नोडल अधिकारी
राष्ट्रीय पशुधन मिशन, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
[2]मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

उपरोक्त योजनान्तर्गत भेड़ / बकरी पालन में रुचि रखने वाले पशुपालकों के लिए उद्यमिता विकास के बड़े नए अवसर आप के पास है। खुद विकास के साथ साथ आप रोजगार सृजन में सहयोगी बनेंगे।

*प्रत्येक प्रोजेक्ट की पूंजीगत लागत की **50 %** सब्सिडी लाभार्थी को प्रदान की जायेगी*

विकल्प-1: यदि आपके पास एक एकड़ भूमि है तो आप **100** भेड़/ बकरी और पांच नर भेड़/ बकरी पाल सकते हैं। आपको **1800** वर्ग फीट पर आवास (शेड) बनाना होगा और **1800** वर्ग फिट क्षेत्र खाली रखना होगा **।**

पूरा प्रोजेक्ट **20** लाख रुपए का होगा जिसमें **₹ 2** लाख आपको मार्जिन मनी लगानी होगी। **18** लाख रुपए आप बैंक ऋण लेंगे **। 05** लाख रुपए **25%** कार्य पूर्ण होने पर भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी। **100%** कार्य पूर्ण होने पर अवशेष धनराशि **05** लाख भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी **।**

विकल्प-2: इसी प्रकार यदि आपके पास दो एकड़ भूमि है तो आप **200** भेड़ / बकरी एवं **10** नर भेड़ / बकरा पाल सकते हैं । आपको **3600** वर्ग फीट पर आवास बनाना होगा और **3600** वर्ग फिट खाली रखना होगा। यह पूरी योजना **40** लाख की होगी जिसमें आपको **₹ 4** लाख मार्जिन मनी लगाना होगा। **36** लाख रुपए आप बैंक से ऋण लेंगे **। 10** लाख रुपए **25%** कार्य पूर्ण होने पर भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी। **100%** कार्य पूर्ण होने पर अवशेष धनराशि **10** लाख भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी मिलेगी।

विकल्प-3: यदि आपके पास तीन एकड़ भूमि है तो आप **300** भेड़/ बकरी एवं **15** नर भेड़ /बकरी पाल सकते हैं । आपको **5400** वर्ग फीट पर आवास बनाना होगा और **5400** वर्ग फिट खाली रखना होगा । पूरा प्रोजेक्ट **60** लाख का होगा। उसको **6** लाख मार्जिन मनी लगानी होगी। **54** लाख बैंक ऋण लेना होगा। **15** लाख रुपए **25 %**कार्य पूर्ण होने पर भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी। **100%** कार्य पूर्ण होने पर अवशेष धनराशि **15** लाख भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी ।

विकल्प-4: यदि आपके पास चार एकड़ भूमि है तो आप **400** भेड़ / बकरी एवं **20** नर भेड़ / बकरी पाल सकते हैं । आपको **7200** वर्ग फीट पर आवास बनाना होगा और **7200** वर्ग फिट खाली रखना होगा । पूरा प्रोजेक्ट **80** लाख का होगा जिसमें से आपको **₹8** लाख मार्जिन मनी लगानी होगी। **72**

लाख रुपए आप बैंक ऋण लेंगे । **20** लाख रुपए **25%** कार्य पूर्ण होने पर भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी। **100%** कार्य पूर्ण होने पर अवशेष धनराशि **20** लाख भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी मिलेगी।

विकल्प-5: इसी प्रकार यदि आपके पास **5** एकड़ भूमि हो तो आपको **9000** वर्ग फीट पर आवास बनाना होगा**, 9000** वर्ग फिट खाली रखना होगा। आप **500** भेड़/ बकरी एवं **25** नर भेड़ / बकरी पाल सकते हैं । आपको पूरा प्रोजेक्ट एक करोड़ का होगा जिसमें से **10** लाख रुपए आपको मार्जिन मनी लगानी होगी । **90** लाख रुपए आप बैंक ऋण लेंगे ।

25 लाख रुपए **25%** कार्य पूर्ण होने पर भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी दी जाएगी। **100%** कार्य पूर्ण होने पर अवशेष धनराशि **25** लाख भारत सरकार द्वारा आपको सब्सिडी मिलेगी ।

*****सभी प्रोजेक्टस में प्रोजेक्ट की कुल लागत का **10%** अंश लाभार्थी द्वारा वहन किया जाएगा और शेष धनराशि का बैंक द्वारा लोन कराया जाएगा **I***

सभी योजनाओं के संबंध में अधिक जानकारी के लिए आप * **https://nlm.udyamimitra.in*** पर जाकर ले सकते हैं और आवेदन कर सकते हैं ।

*__आवेदन के समय आवश्यक दस्तावेज*__

- अपनी भूमि के दस्तावेज/ अपनी भूमि कम होने अथवा न होने पर रजिस्टर्ड लीज की भूमि के दस्तावेज
- भेड़ /बकरी पालन का प्रशिक्षण प्रमाण पत्र
- पिछले **6** माह का बैंक स्टेटमेंट
- आधार कार्ड**,** पैन कार्ड**,** बैंक पासबुक**,** बैंक का निरस्त चेक
- भेड़ /बकरी पालन करने के स्थान का जियो टैग फोटोग्राफ
- भूमि का नजरी नक्शा

विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट आदि ।

पशुपालक मित्र
पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511(Online)

लेख भेजने के लिए निर्देश :

- लेख हिन्दी में मंगल फॉन्ट एवं microsoft word में होने चाहिये ।
- लेख पशुपालन से संबन्धित होना चाहिये।
- लेख में वैज्ञानिक या तकनीक शब्दों का कम से कम प्रयोग होना चाहिए ।
- लेख की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि पशुपालक को समझने में परेशानी न हो ।
- लेख के प्रकाशन का निर्णय संपादक का होगा।
- लेख का प्रकाशन निः शुल्क होगा ।
- लेख को प्रकाशन के लिए ईमेल आई डी pashupalakmitra1@gmail.com पर भेजना होगा।
- लेखक को निम्न प्रारूप में एक स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लेख के साथ सलग्न करना होगा प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न लेख...शीर्षक...............लेखक ...लेखक का नाम .... द्वारा लिखित एक मौलिक, अप्रकाशित रचना है, तथा इसे प्रकाशन के लिए किसी अन्य पत्रिका में नही भेजा गया है।
- लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा , संपादक का नही ।